मुस्लिम समुदाय के प्रतिभागियों की विद्यालय ड्रॉप-आउट की समस्याएँ एवं उनका परिप्रेक्ष्य

अमर सिंह*
अजित कुमार राय**

वर्तमान शोध पत्र वाराणसी जनपद के नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों के राज्य शासित प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों से ड्राप-आउट मुस्लिम प्रतिभागियों पर केंद्रित है। इस अध्ययन में गुणात्मक शोध प्रारूप के अंतर्गत प्रयुक्त होने वाले प्रघटनशास्त्रीय उपागम को अपनाते हुए प्रतिभागी के रूप में 2013 से 2016 के मध्य ड्रॉप-आउट कुल 19 मुस्लिम प्रतिभागियों का चयन उद्देश्यात्मक प्रतिदर्शन विधि से किया गया। उपकरण के रूप में अर्द्ध-संरचित साक्षात्कार एवं फ़ोकस ग्रुप डिस्कशन के माध्यम से प्रतिभागियों (विद्यार्थियों) का अनुभव तीन चरणों में प्राप्त किया गया, जो फ़रवरी 2017 से प्रारंभ होकर दिसंबर 2018 तक चला था। तत्पश्चात् साक्षात्कार से प्राप्त उनके निजी अनुभवों एवं परिप्रेक्ष्यों का आगमनात्मक विश्लेषण किया गया। शोध परिणामों को दस संकेतों के सापेक्ष प्राप्त किया गया और अध्ययन की सहजता के लिए परिणामों को पुनः दो प्रश्नों के सापेक्ष प्रस्तुत किया गया। जिसमें प्रतिभागियों के ड्रापआउट की समस्याओं को विश्लेषणात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है।

शिक्षा केवल कार्यक्षमता को बढ़ाने मात्र का साधन नहीं है, यह जनसाधारण की सहभागिता को व्यापक बनाने तथा व्यक्ति एवं समाज की समग्र गुणवत्ता के उन्नयन का एक प्रभावी उपकरण भी है। अतः शिक्षा का प्रसार, शिक्षा में ठहराव एवं शिक्षा में गुणवत्ता किसी भी राष्ट्र के सतत एवं संतुलित विकास को आधार प्रदान करता है *(राष्ट्रीय शिक्षा नीति,1986)*; सर्व शिक्षा अभियान, 2000; मध्याह्न भोजन कार्यक्रम, 1995 *(भारत, 2020)*। यद्यपि प्रसार एवं गुणवत्ता के सरोकार अति महत्वपूर्ण हैं, शिक्षा में ठहराव सुनिश्चित करना भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। शिक्षा में ठहराव से तात्पर्य प्रतिभागियों का औपचारिक शिक्षा में नामांकन के उपरांत शिक्षा के निर्धारित चरण तक शिक्षा को पूर्ण करने से है, ठहराव की अवधारणा के विपरीत ड्रॉप-आउट की अवधारणा है, जिसका तात्पर्य नामांकन के उपरांत निर्धारित शैक्षिक स्तर के पहले ही शिक्षा अथवा विद्यालय को छोड़ देने से है। यह शोध पत्र ड्रॉप-आउट की अवधारणा से संबंधित है एवं इसका संदर्भ मुस्लिम समुदाय के उन प्रतिभागियों से है जो राज्य शासित विद्यालयों में प्राथमिक एवं उच्च-प्राथमिक स्तर पर नामांकित थे।

शोधार्थी, शिक्षा संकाय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221005
***असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, शिक्षा संकाय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221005

© NCERT not to be republished

ड्रॉप-आउट के अंतर्गत उन प्रतिभागियों को सम्मिलित किया जाता है जो किसी घटना के कारण अनिवार्य शिक्षा पूर्ण करने से पहले ही विद्यालय छोड़ देते हैं (गुड, 1973)। दूसरे शब्दों में, शैक्षिक चक्र को पूरा किए बिना ही जब प्रतिभागी संस्था से अपनी सदस्यता समाप्त कर लेता है तो ऐसे प्रतिभागियों को ड्रॉप-आउट प्रतिभागी कहा जाता है। परंतु मृत्यु उपरांत यदि यह सदस्यता समाप्त होती है तो उसे ड्रॉप-आउट नहीं कहा जाता है (अग्निहोत्री, 2010, पृष्ठ 56)। ड्रॉप-आउट की समस्या एक गंभीर समस्या है। सामुदायिक स्तर पर देखें तो हिंदू, ईसाई और मुस्लिम समुदायों में ड्रॉप-आउट की दर क्रमशः (2.73), (1.52) एवं (4.43) पाई गई *(नेशनल सर्वे ऑन एस्टीमेशन ऑफ़ आउट ऑफ़ स्कूल चिल्ड्रन, 2014)*। उत्तर प्रदेश राज्य में यह दर हिंदू एवं मुस्लिम समुदाय में क्रमशः (3.39) और (5.45) है, इसके अलावा हिंदू समुदाय के अनुसूचित जाति (4.29) एवं जनजाति (4.07), अन्य पिछड़ा वर्ग (4.19) हैं। जबकि डिस्ट्रिक्ट रिपोर्ट कार्ड्स (2014–15) के अनुसार वाराणसी जनपद के राज्य-शासित प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों में मुस्लिम प्रतिभागियों का ड्रॉप-आउट दर प्राथमिक स्तर पर (3.95), उच्च प्राथमिक स्तर पर (4.75) रही जो अन्य सामाजिक-धार्मिक श्रेणी में सर्वाधिक थी (न्यूपा, 2014–15, पृष्ठ 1292)। यद्यपि ड्रॉप-आउट की समस्या एक सार्वभौमिक समस्या है जो शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर और प्रत्येक समुदाय में व्याप्त है, किंतु मुस्लिम समुदाय में ड्रॉप-आउट की समस्या एक गंभीर चिंता का विषय है (स्टेट्स ऑफ़ एलीमेंट्री एजुकेशन इन उत्तर प्रदेश (डी.आई.एस.ई., 2011–12)।

वर्तमान अध्ययन के संदर्भ में किए गए साहित्यिक सर्वेक्षण से पता चलता है कि ड्रॉप-आउट की प्रघटना को लेकर किए गए अधिकतम अध्ययन गणनात्मक अभिकल्प के माध्यम से किए गए थे (हुसैन, 2005; फैथ, 2009; आलम, 2011; सिंह, 2011; जमाल और रहीम, 2012; फ़ारुख, 2012; अफसर, 2014; गौड़ा और शेखर, 2014; हक़, 2016; सेनगुप्ता एंडरूज़, 2018; लस्कर, 2018)। गुणनात्मक अध्ययन द्वारा ड्रॉप-आउट के संदर्भ में जो निष्कर्ष प्राप्त हुए वे प्रतिभागियों के परिप्रेक्ष्य को पूरी तरह से प्रस्तुत करने में सफल नहीं हुए हैं, चूँकि गुणात्मक शोध अधिकांशतः त्रुटिविहीन प्रत्यक्षीकरण की भ्रांति (फ़ैलेसी ऑफ़ एमैक्यूलेट पर्सेप्शन) से ग्रसित होते हैं। इस सिद्धांत के तहत शोधार्थी द्वारा चयनित विकल्पों को ही संभावित विकल्पों के रूप में मान लिया जाता है एवं प्रतिभागियों को इन्हीं सीमित विकल्पों के मध्य से अपने विकल्प को चुनना होता है, जो उनके प्रत्यक्षीकरण का सही प्रतिनिधित्व नहीं करता है। ऐसे में यह आवश्यक है कि गुणात्मक शोध द्वारा प्रतिभागियों के प्रत्यक्षीकरण एवं परिप्रेक्ष्य को जाना जाए। यद्यपि कुछ अध्ययनों में (फैथ, 2009; सिंह, 2011; बेगम, 2015) मिश्रित प्रश्नों (बंद एवं खुले) का उपयोग किया गया, परंतु वे प्रतिभागियों के परिप्रेक्ष्य को केंद्रित करके नहीं बनाए गए थे। दूसरा महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि ड्रॉप-आउट से संबंधित अधिकतम अध्ययन ऐसे हैं, जिनमें प्रतिदर्श के तौर पर मुस्लिम एवं गैर-मुस्लिम, जैसे— अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के प्रतिभागियों

© NCERT not to be republished

को भी सम्मिलित किया गया था (बसंत, 2007; फैथ, 2009; रॉय, 2011; फारूख, 2012; गौड़ा और शेखर, 2014; बेगम, 2015)। इस कारण उनसे उक्त प्रघटना के पीछे छिपे कारणों का भी मिला-जुला स्वरूप प्राप्त होता है, जो मुस्लिम प्रतिभागियों के ड्रॉप-आउट की समस्या का स्पष्ट स्वरूप प्रस्तुत नहीं करता है। इसके विपरीत कुछ अध्ययन मुस्लिम प्रतिभागियों को भी लेकर किए गए हैं, किंतु ये अध्ययन केवल उन्हीं आयामों एवं कारकों की पुनरावृति मात्र हैं, जो आज से पाँच दशक पूर्व स्थापित किए जा चुके थे (सिद्दीकी, 2011; आलम, 2011; सिद्दीकी, 2013; अफसर, 2014; ब्रह्मा, 2015; हक, 2016; सिंह और राय, 2017) चूँकि गुणात्मक शोध गणनात्मक शोध की आधारशिला होती है, इस वजह से यह आवश्यक है कि इस क्षेत्र में एक नवीन गुणात्मक शोध द्वारा मुस्लिम प्रतिभागियों के ड्रॉप-आउट से जुड़ी नवीन अवधारणाओं को स्थापित किया जाए ताकि भविष्य में न केवल गणनात्मक शोध किए जा सकें, अपितु मुस्लिम प्रतिभागियों कि प्राथमिक शिक्षा को लेकर नवीन नीतियों एवं योजनाओं को भी निर्मित किया जा सके, इसी पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए यह शोध किया गया।

शोध प्रश्न

प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर ड्रॉप-आउट से संबंधित मुस्लिम समुदाय के प्रतिभागियों का परिप्रेक्ष्य क्या है? का उत्तर प्राप्त करना था।

विधि

इस शोध हेतु गुणात्मक शोध उपागम के अंतर्गत प्रघटनाशास्त्रीय (फ़ेनोमेंनोलॉजीकल) शोध विधि को प्रयुक्त किया गया था। इस विधि के तहत किसी घटना अथवा अवधारणा को पूर्वाग्रहों, पूर्व मान्यताओं और स्थापित सिद्धांतों से स्वतंत्र, उससे संबंधित व्यक्तियों के परिप्रेक्ष्य के माध्यम से समझने का प्रयास किया जाता है (मेंयर्स, 2016)। प्रघटनाशास्त्र घटना को बिना विशिष्ट नज़रिए से अपने मौलिक रूप में अर्थात् जैसी वे अपने मौलिक रूप में प्रतिभागियों के संज्ञान में प्रस्तुत होती है, उसे उसी रूप में देखने, समझने और व्याख्यायित करने की एक विधि है।

क्रेसवेल (2003) के अनुसार, गुणात्मक शोध विधि में आँकड़ों के संकलन हेतु हेतु पाँच से पचीस प्रतिभागियों की संख्या उपयुक्त मानी जा सकती है। इस अध्ययन हेतु 19 प्रतिभागियों का चयन उद्देश्यपूर्ण चयन विधि के माध्यम से किया गया। जिनमें 10 प्रतिभागी नगरीय क्षेत्र से और नौ प्रतिभागी ग्रामीण क्षेत्र से थे। सभी प्रतिभागी मुस्लिम समुदाय के बुनकर समाज से संबंधित थे। वाराणसी क्षेत्र में बुनकरी एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है, जिसमें मुख्यतः मुस्लिम समुदाय कई पीढ़ियों से संलग्न है। वर्तमान में इस समुदाय के लोग आर्थिक रूप से विपन्नता की स्थिति में हैं एवं इस समुदाय में औपचारिक शिक्षा की पैठ न्यून है।

इस अध्ययन में गुणात्मक शोध उपागम के अनुसार साक्षात्कार एवं फ़ोकस ग्रुप डिस्कशन को शोध उपकरण के रूप में प्रयुक्त किया गया था। चूँकि, प्रतिभागियों के परिप्रेक्ष्य को समझने के लिए उनके ड्रॉप-आउट संबंधित परिप्रेक्ष्य को ज्ञात करना आवश्यक है, अतः शोधार्थी एवं प्रतिभागी में

© NCERT not to be republished

संवाद स्थापित होना भी आवश्यक था, जिसके लिए साक्षात्कार एक उपयुक्त माध्यम है। पुनः प्रतिभागियों में से उन चार प्रतिभागियों को चयनित कर शामिल किया गया जो साक्षात्कार के दौरान अधिक मुखर थे एवं जिन्होंने इस फ़ोकस ग्रुप डिसकशन हेतु अपनी संस्तुति दी थी।

आँकड़ों का संकलन त्रिस्तरीय साक्षात्कार एवं फ़ोकस ग्रुप डिसकशन के माध्यम से 2017–18 के दौरान पूरा किया गया। साक्षात्कार के प्रथम चरण में पूर्व निर्मित प्रश्नों के माध्यम से पहले प्रतिभागी से मेल-जोल विकसित किया गया एवं असंरचित प्रश्नों के माध्यम से ड्रॉप-आउट संबंधित उनके परिप्रेक्ष्यों को संकलित किया गया। द्वितीय चरण में पहले चरण के आँकड़ों के विश्लेषण पर आधारित पुनः साक्षात्कार द्वारा और अधिक सूचनाएँ एकत्रित की गई एवं स्पष्टीकरण किया गया। तीसरे चरण में भी दूसरे चरण की प्रक्रिया की पुनरावृति की गई। तीसरे चरण में प्रतिभागियों द्वारा व्यक्त उनके अनुभाविक विचारों के विश्लेषण द्वारा प्राप्त शोधार्थी द्वारा की गई व्याख्या की पुष्टि भी कराई गई। अंत में प्रतिभागियों को फ़ोकस ग्रुप डिसकशन में सम्मिलित किया गया एवं इस परिचर्चा में उठे प्रश्नों एवं प्रतिभागियों की अनुक्रियाओं को लिपिबद्ध किया गया।

वर्तमान अध्ययन में विद्यालयी ड्रॉप-आउट के संदर्भ में सहभागियों से किए गए साक्षात्कार से प्राप्त उनके निजी अनुभवों एवं परिप्रेक्ष्यों का आगमनात्मक विश्लेषण पाँच चरणों में संपादित किया गया— (1) संकलित करना; (2) विभक्त करना; (3) पुनः जोड़ना; (4) व्याख्या करना और (5) निष्कर्ष निकालना।

उपरोक्त विधि द्वारा विश्लेषण से प्राप्त परिणामों की विश्वसनीयता को गुणात्मक शोध की मान्य विधियों द्वारा स्थापित किया गया, जिनमें मुख्यतः दीर्घकालिक जुड़ाव, प्रतिभागी प्रतिपुष्टि एवं ऑडिट ट्राइल सम्मिलित थे।

परिणाम

गुणात्मक शोध प्रणाली की मानक प्रविधियों के अनुरूप आगमनात्मक विश्लेषण के द्वारा प्रतिभागियों के परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत किया गया। प्रतिभागियों की अनुक्रियाओं का आगमनात्मक विश्लेषण कर उनके संपूर्ण परिप्रेक्ष्य को दस संकेतों के रूप में संकलित किया गया। प्रस्तुतीकरण को प्रासंगिक एवं अर्थयुक्त बनाने के लिए शोधार्थी ने इन दस संकेतों की व्याख्या पुनः दो महत्वपूर्ण प्रश्नों के सापेक्ष की है जो प्राप्त कूट संकेतकों को एकीकृत करते हैं एवं जो इस प्रकार हैं—

प्रश्न 1— प्रतिभागियों का ड्रॉप-आउट संबंधित स्व-अनुभव क्या था?

परिणाम 1

विश्लेषण द्वारा प्राप्त छह कूट संकेतक एकीकरण प्रश्न 1 के उत्तर स्वरूप प्राप्त हुए। प्रत्येक कूट संकेतक ड्रॉप-आउट के संदर्भ में प्रतिभागियों के एक विशिष्ट परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत करता है। पुनः प्रत्येक परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण उसके महत्वपूर्ण आयामों के माध्यम से सारणी 1 में प्रस्तुत किया गया है।

© NCERT not to be republished

तालिका 1— प्रतिभागियों के ड्रॉप-आउट संबंधित परिप्रेक्ष्य

प्रथम स्तरीय कूट संकेतक	उप कूट संकेतक	प्रतिभागियों की आवृत्ति	प्रतिक्रिया की आवृत्ति	उद्धरण
पारिवारिक परिप्रेक्ष्य	परिवेश	14	24	मेरा एक भाई है वो घर छोड़ दिया, शादी हो गयी थी लड़ाई झगड़ा होता था इस वजह से अलग हो गए फिर अब्बू अकेले हो गए पर उनका मन नहीं था कि हम आए इस काम में लेकिन मेरे पास पढ़ाई छोड़ने के अलावा कोई ऑप्शन नहीं था ...(RS1)
	अशिक्षा	11	23	जब घर में अब्बू-अम्मी, भाई लोग कोई नहीं पढ़ा है तो हम कहाँ से पढ़ लेते... स्कूल तो हम खाली धंधे के हिसाब-किताब सीखने जाते थे ... (US8)
	आर्थिक ज़िम्मेदारी	8	29	एक और बात थी कि नौबत ये आ गयी की मेरे छोटे भाई-बहन को भी काम में लेने की बात होने लगी मै चाहता था की मेरी छोटी बहन अच्छे स्कूल में पढ़े पर ऐसा होते देख हम खुद उठ गए... (US1)
सामुदायिक परिप्रेक्ष्य	नकारात्मक दृष्टिकोण	6	11	अब जैसे हमी थे पढ़ रहे थे अब मोहल्ले के लोग आ गए और हमारे अब्बू से कहने लगे अरे तुम्हारा लड़का अभी पढ़ रहा है मुश्ताक का लड़का पाँच तक पढ़ कर पूरा धंधा देख रहा है तुम का एका अफ़सर बनईबों... (US2)
	प्रेरणाहीनता	15	25	देखिये हमारे यहाँ पढ़े-लिखे लोगो का मज़ाक बनाया जाता है... हम जब स्कूल जाते थे तो मोहल्ले वाले कहते थे सब लोग पढ़ लिए अब ये जा रहे है पढ़ने इसी लिए हम स्कूले छोड़ दिये...(US5)
मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य	मानसिक द्वंद्व	16	33	अब आप सोच लीजिये हालत ऐसे थे की एक बेला काम पे जाये तो एक बेला पढ़ने जाये ये भी था ना अब काम पे लेट हो जाये तो गृहस्ता नाराज होने लगे की इतना अबेर में क्यों आते हो और स्कूल में लेट हो तो सर लोग नाराज होने लगे की रोज तुम्हे देर हो जाती है कोई रास्ता ही नहीं बचा था... (US7)
	भाषायी द्वंद्व	13	29	अब स्कूल जाए तो हिन्दी का क ख ग पढ़ना रहता था और मौलाने के यहाँ अरबी-फ़ारसी, हमको कुछ समझ में ही न आए इस लिए पढ़ाई ही छोड़ दिए... (RS3)

© NCERT not to be republished

धार्मिक परिप्रेक्ष्य		7	13	देखिये हम लोगन में पहले अपने मजहब की शिक्षा ली जाती है उसके बाद ही आगे की पढ़ाई के लिए हम लोग स्कूल जाते है... (US6)
वैकल्पिक शिक्षा		11	23	अब स्कूल और घर का काम साथ नहीं हो सकता था लेकिन ट्यूशन और घर का काम साथ-साथ हो सकता था इसलिए हम स्कूल छोड़ कर घर पर ही ट्यूशन करते है... (US7)
वैकल्पिक शिक्षा	शारीरिक दंड	7	13	बहोत मार खाया हम लोगों ने बहोत मारा साले मास्टर बहोत कमीना था भाई पुरे स्कूल में खली हमी लोग लात खाते थे... कोई भी गलती करे ना हमी लोग को पिस देता था बिना गलती के हा खीज निकलता था एक बार तो बिना गलती के मास्टर ने ऐसा मारा की हम स्कूल जाना ही छोड़ दिए... (US8)
	पक्षपात	4	11	सरकार की तरफ से जो बस्ता, ड्रेस, खाना, फल-फूल स्कूल में बाँटने के लिए आता था उसे अपनी बिरदारी के लड़कन में ज्यादा-ज्यादा बाँट देते थे हम लोगन को एक भी नहीं मिलता था... (RS2)
	गुणवत्ता	8	14	जब विद्यालय में पढाई ही नहीं होती थी तो का करने जाये स्कूल, ज्यादा टाईम पढ़ाई नहीं होती थी टीचर बैठे है पढ़ाते ही नहीं थे तो चले जाते थे, जब कोई अधिकारी आ रहा होता है तब हार्ड पढ़ाई होती थी... (RS1)
	आधारभूत संरचना	11	21	कमरे में पल्ला नहीं था पल्ला मतलब दरवाजा और पंखा भी नहीं था एक ठो पंखा था पुरे क्लासरूम में कैसे हवा देगा आप ही बताईये और लाइट तो थी ही नहीं पानी बहोत गन्दा आता था इसलिए हम लोग घर से लेके जाते थे और बाथरूम भी बहोत कम था... (US4)
	संगत	13	22	यहा देखिये मित्रों का साथ भी बहुत जरूरी होता है जैसे एक ने मन बनाया की अब काम करना है तो सब स्कूल छोड़ के अब काम करने लगेंगे... (US2)

© NCERT not to be republished

विवेचना

आँकड़ों के आगमनात्मक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि ड्रॉप-आउट संबंधित परिप्रेक्ष्य बहुआयामी है। ड्रॉप-आउट संबंधित कुल छह भिन्न-भिन्न परिप्रेक्ष्यों को प्राप्त किया गया, जिसके माध्यम से प्रतिभागी अपने अनुभवों को व्यक्त करते हैं। ये छह परिप्रेक्ष्य, पारिवारिक, सामुदायिक, मनोवैज्ञानिक, धार्मिक, वैकल्पिक शिक्षा एवं विद्यालयी परिप्रेक्ष्य थे, जिनका विस्तृत विवेचन इस प्रकार है—

पारिवारिक परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में प्रतिभागी पारिवारिक परिवेश (जिसे 14 प्रतिभागियों द्वारा उनकी कुल 24 प्रतिक्रियाओं की आवृति के माध्यम से प्राप्त किया गया), अभिभावकों की अशिक्षा (जिसे 11 प्रतिभागियों द्वारा उनकी कुल 23 प्रतिक्रियाओं की आवृति के माध्यम से प्राप्त किया गया) एवं आर्थिक ज़िम्मेदारी (जिसे आठ प्रतिभागियों द्वारा उनकी कुल 29 प्रतिक्रियाओं की आवृति के माध्यम से प्राप्त किया गया), के रूप में निरूपित करते हैं। प्रतिकूल पारिवारिक परिवेश जिसमें आए दिन झगड़े होते हैं एवं जहाँ शिक्षा का कोई माहौल नहीं है, वहाँ वे विद्यालयी शिक्षा से विमुख होने की प्रघटना को स्वाभाविक मानते हैं। अभिभावकों की अशिक्षा के कारण वे शैक्षिक ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के लिए अभिप्रेरित नहीं थे, औपचारिक शिक्षा के प्रति उदासीन थे एवं प्रतिभागियों को उनके विद्यालयी जीवन में उचित मार्गदर्शन देने में अक्षम थे। साथ ही साथ आर्थिक स्थिति कमज़ोर होने के कारण प्रतिभागियों को विद्यालय से अधिक व्यवसाय संबंधित गतिविधियों में संलग्न होना पड़ता था जिसके चलते वे धीरे-धीरे विद्यालय से विमुख होकर ड्रॉप-आउट हो गए।

सामुदायिक परिप्रेक्ष्य के तहत प्रतिभागी समुदाय में व्याप्त औपचारिक शिक्षा के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण (जिसे छह प्रतिभागियों द्वारा उनकी कुल 11 प्रतिक्रियाओं की आवृति के माध्यम से प्राप्त किया गया) एवं प्रेरणाहीनता (जिसे 15 प्रतिभागियों द्वारा उनकी कुल 25 प्रतिक्रियाओं की आवृति के माध्यम से प्राप्त किया गया) की चर्चा करते हैं। बुनकरों के समुदाय में औपचारिक शिक्षा के प्रति नकारात्मकता के कई मिथक व्याप्त हैं, जैसे यदि कोई अभिभावक अपने बच्चे को आगे पढ़ाना भी चाहता है तो उनके समुदाय के लोग यह कह कर उसका विरोध करने लगते है की फलाँ व्यक्ति का लड़का इतनी उम्र में अपना संपूर्ण व्यवसाय संभाल रहा है, तुम क्या इसको पढ़ाकर अफ़सर बनाओगे। इसके अतिरिक्त समुदाय प्रेरणाहीनता के स्रोत के रूप में भी कार्य करता है, जैसे कि विद्यालयी शिक्षा में संलग्न विद्यार्थियों को उपहास का विषय बनाया जाता है।

मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य को प्रतिभागी ड्रॉप-आउट होने के घटना चक्र के दौरान के मानसिक तनाव एवं मानसिक द्वंद्व के आयामों के माध्यम से व्यक्त करते हैं (जिसे 16 प्रतिभागियों द्वारा उनकी कुल 33 प्रतिक्रियाओं की आवृति के माध्यम से प्राप्त किया गया), परिवार में व्याप्त तनाव के कारण उन्हें भी तनाव की स्थिति में रहना पड़ता है, जो उनमें शिक्षा के प्रति उदासीनता को संचारित करने का कारण है। पुनःअधिकांश प्रतिभागी अपने प्रत्यक्षीकरण में विद्यालयी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने एवं साथ ही साथ पारिवारिक आय के स्रोत के रूप में अपनी ज़िम्मेदारी उठाने से उपजे द्वंद्व की चर्चा करते हैं। द्वंद्व के अन्य स्रोत के रूप में वे भाषा संबंधी द्वंद्व का

© NCERT not to be republished

प्रत्यक्षीकरण करते हैं। (जिसे 13 प्रतिभागियों द्वारा उनकी कुल 29 प्रतिक्रियाओं की आवृति के माध्यम से प्राप्त किया गया)। औपचारिक शिक्षा एवं धार्मिक शिक्षा में समानांतर शामिल होने के कारण उपजे मानसिक बोझ से व्युत्पन्न द्वंद्व प्रमुख पहलू है, इसके अतिरिक्त धार्मिक शिक्षा में उर्दू भाषा की प्रमुखता एवं विद्यालयी शिक्षा में हिंदी भाषा की प्रमुखता के कारण भी उन्हें मानसिक द्वंद्व का सामना करना पड़ता है।

धार्मिक परिप्रेक्ष्य के तहत प्रतिभागी परिवार एवं समुदाय में शिक्षा संबंधित धार्मिक प्रभाव के वर्चस्व का वर्णन करते हैं, (जिसे सात प्रतिभागियों द्वारा उनकी कुल 13 प्रतिक्रियाओं की आवृति के माध्यम से प्राप्त किया गया) उनके अनुसार औपचारिक शिक्षा की तुलना में धार्मिक शिक्षा के प्रति चैतन्यता अधिक थी एवं उनके लिए औपचारिक शिक्षा की तुलना में धार्मिक शिक्षा को पूरा करना अनिवार्य था। प्रतिभागियों की मान्यता थी कि धार्मिक शिक्षा उनकी जीवनचर्या से जुड़ी है, जबकि औपचारिक शिक्षा उनके व्यावसायिक हिसाब-किताब करने का एक साधन मात्र था। वैकल्पिक शिक्षा की चर्चा करते हुए प्रतिभागी एक नवीन परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत करते हैं, (जिसे 11 प्रतिभागियों द्वारा उनकी कुल 23 प्रतिक्रियाओं की आवृति के माध्यम से प्राप्त किया गया) चूँकि, समुदाय एवं परिवार में शिक्षा संबंधित संकीर्ण अवधारणा व्याप्त थी, जिसमें औपचारिक शिक्षा का उद्देश्य बुनकर विद्यार्थियों में हिसाब-किताब करने की दक्षता को प्राप्त करना था। अतः अभिभावक वैकल्पिक शिक्षा (विशेषकर ट्यूशन के रूप में) को अधिक महत्व देते हैं, क्योंकि इसके चलते प्रतिभागियों को अपने व्यवसाय संबंधित कार्यों हेतु अधिक समय मिल सकता था।

अंततः प्रतिभागी पाँच उप कूट संकेतों के माध्यम से ड्रॉप-आउट संबंधित विद्यालयी परिप्रेक्ष्य को स्पष्ट करते हैं। इसके तहत विद्यालय में दिया जाने वाला शारीरिक दंड (जिसे सात प्रतिभागियों द्वारा उनकी कुल 13 प्रतिक्रियाओं की आवृति के माध्यम से प्राप्त किया गया), विद्यालयी संगत (जिसे 13 प्रतिभागियों द्वारा उनकी कुल 22 प्रतिक्रियाओं की आवृति के माध्यम से प्राप्त किया गया), विद्यालयी परिवेश में व्याप्त उनके प्रति किए जाने वाले पक्षपात (जिसे चार प्रतिभागियों द्वारा उनकी कुल 11 प्रतिक्रियाओं की आवृति के माध्यम से प्राप्त किया गया), शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की गुणवत्ता में कमी (जिसे आठ प्रतिभागियों द्वारा उनकी कुल 14 प्रतिक्रियाओं की आवृति के माध्यम से प्राप्त किया गया) एवं आधारभूत संरचना के अभाव (जिसे 11 प्रतिभागियों द्वारा उनकी कुल 21 प्रतिक्रियाओं की आवृति के माध्यम से प्राप्त किया गया) की चर्चा करते हैं।

प्रश्न 2 — ड्रॉप-आउट प्रतिभागी के रूप में प्रतिभागियों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य क्या है?

परिणाम 2

विश्लेषण द्वारा प्राप्त दो कूट संकेतक एकीकरण प्रश्न 2 के उत्तर स्वरूप प्राप्त हुए। प्रत्येक कूट संकेतक ड्रॉप-आउट के संदर्भ में प्रतिभागियों के वर्तमान परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत करता है। पुनः प्रत्येक परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण उसके महत्वपूर्ण आयामों के माध्यम से तालिका 2 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 2— ड्रॉप-आउट संबंधित प्रतिभागियों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य

कूट संकेतक	उप कूट संकेतक	प्रतिभागियों की आवृत्ति	प्रतिक्रिया की आवृत्ति	उद्धरण
क्षोभ	व्यावसायिक अवनति	14	26	हम सोचे कि हम पढ़लेंगे तो आगे भविष्य में कुछ बन जाएंगे ऐसा नहीं था कि नौकरी ही मेंरा खुद का बिजनेस भी अच्छा हो जाता... (US9)
	रोज़गार उन्मुख्ता	13	29	समस्या न होती और हम पढ़ते तो डॉक्टर बनना तो तय था... (US5)
	सामाजिक अस्वीकार्यता	12	26	पढ़ाई इसलिए जरूरी है कि चार लोगो के बीच में खड़े हो तो कुछ बोल पाओं समझ पाओं ये कोई न समझ पाये कि लड़का पढ़ा-लिखा नहीं है ... (US7)
अपरिपक्व अवधारणा		18	39	सोचते है हम भी पढ़ लिए होते तो नौकरी-फ़ौकरी लग जाती हमको भी सबकी तरह फिक्स रुपया मिलता... अब नहीं पढ़े तो मजदूर बन कर रह गए...(RS2)

विवेचना

प्रतिभागियों से प्राप्त अनुक्रियाओं के आधार पर एक भिन्न प्रकार के परिप्रेक्ष्य का पता चलता है जो उनके मन में व्याप्त क्षोभ को प्रदर्शित करता है। प्रतिभागियों ने ड्रॉप-आउट होने के उपरांत अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर शिक्षा संबंधित एक अवधारणा को निर्मित किया जो उनमें ड्रॉप-आउट होने को लेकर पछतावे के भाव को विकसित करती है। इस परिप्रेक्ष्य को प्रतिभागियों ने भिन्न-भिन्न पहलुओं के माध्यम से शिक्षा की प्रासंगिकता एवं महत्व संबंधित अपने विचारों को रखते हुए अपने अशिक्षित रह जाने के क्षोभ को व्यक्त किया है। प्रतिभागियों में व्याप्त क्षोभ के कई आयाम प्रस्तुत होते हैं।

प्रथम, अशिक्षा के कारण व्यावसायिक कार्यों में आने वाली बाधाओं (जिसे 14 प्रतिभागियों द्वारा उनकी कुल 26 प्रतिक्रियाओं की आवृति के माध्यम से प्राप्त किया गया) दूसरा सामाजिक संदर्भों में हीनता के अनुभवों (जिसे 12 प्रतिभागियों द्वारा उनकी कुल 26 प्रतिक्रियाओं की आवृति के माध्यम से प्राप्त किया गया) एवं तीसरा जीवन में आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा रह जाने का क्षोभ (जिसे 13 प्रतिभागियों द्वारा उनकी कुल 29 प्रतिक्रियाओं की आवृति के माध्यम से प्राप्त किया गया) जैसे अनुभवों के माध्यम से प्रतिभागी वर्तमान में अपने अशिक्षित रह जाने के क्षोभ को प्रकट करते हैं। ड्रॉप-आउट एवं शिक्षा संबंधित उनके अनुभवों में रोज़गार की केन्द्रीयता (जिसे 18 प्रतिभागियों द्वारा उनकी कुल 39 प्रतिक्रियाओं की आवृति के माध्यम से प्राप्त किया गया) से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों के इस परिपक्व में अभी भी शिक्षा का स्वरूप संकुचित ही है। यद्यपि शिक्षा को लेकर विद्यालयी जीवन एवं वर्तमान समय में अंतर स्पष्ट होता है। परंतु साथ ही साथ वे शिक्षा को सभ्य समाज की सदस्यता

© NCERT not to be republished

का माध्यम समझते हैं, साथ ही उनकी मान्यता थी कि शिक्षा समाज के अभिजात वर्ग के मध्य अपनी उपस्थिति दर्ज कराने का एक महत्वपूर्ण साधन भी है। तीसरा मुख्य पहलू जो प्रतिभागियों की अनुक्रियाओं में परिलक्षित हुआ, वह व्यावसायिक जीवन में शिक्षा की कमी के अहसास के रूप में व्यक्त हुआ। उनका मानना था कि व्यवसाय में भी सफलता हेतु कहीं न कहीं शिक्षा की भूमिका है। अंततः इन विविध पहलुओं की ओर इंगित करते हुए प्रतिभागी इस बात का क्षोभ प्रकट करते हैं कि यदि वे ड्रॉप-आउट न हुए होते तो बेहतर था एवं उनका आज का भविष्य कुछ अलग होता। साथ ही व्यावसायिक, सामाजिक और व्यक्तिगत स्तर पर भी उन्हें अशिक्षा के चलते हीनता का शिकार नहीं होना पड़ता।

निष्कर्ष एवं परिचर्चा

पूर्व के अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि मुस्लिम प्रतिभागियों के विद्यालयी ड्रॉप-आउट के लिए परिवार की निम्न आर्थिक स्थिति मुख्य रूप से ज़िम्मेदार है, (सैटर, 1982; हुसैन, 2005; जयचंद्रन, 2007; फैथ, 2009; आलम, 2011; रॉय, 2011; फारूख, 2012; सिद्दीकी, 2012; जमाल, 2012; अली, 2014; ब्रह्मा, 2015; हक़, 2016; सिंह और राय, 2017; सेनगुप्ता और रूज़, 2018; लस्कर, 2018; सलमान, 2020)। वर्तमान अध्ययन भी इस बिंदु पर सहमति रखता है। साथ ही साथ इस अध्ययन के माध्यम से ड्रॉप-आउट एवं आार्थिक परिप्रेक्ष्य के विभिन्न पहलुओं का अवबोधन होता है।

विद्यार्थियों के ड्रॉप-आउट संबंधित परिप्रेक्ष्य से यह स्पष्ट है कि आर्थिक स्थिति भिन्न प्रकार से ड्रॉप-आउट का कारण बनती है। ड्रॉप-आउट होना आर्थिक स्थिति एवं औपचारिक शिक्षा के मध्य का प्रतिफल है एवं इस के कई भिन्न-भिन्न पहलू हैं। पारिवारिक एवं सामुदायिक स्तर पर शिक्षा के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण, शैक्षणिक ज़िम्मेदारियों से अभिभावकों का विमुख होना, औपचारिक शिक्षा के सापेक्ष धार्मिक शिक्षा को अधिक महत्व प्राप्त होना, विद्यालयी शिक्षा की तुलना में वैकल्पिक शिक्षा के प्रति झुकाव एवं नकारात्मक विद्यालयी अनुभव जैसे आयामों से यह अंतर्क्रिया व्यक्त होती है। ड्रॉप-आउट के कारकों में शिक्षा के प्रति अरुचि एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में स्थापित है (चौधरी, 2006; जयचंद्रन, 2007; फैथ, 2009; रॉय, 2011; फारूख, 2012; गौडा और शेखर, 2014’ ब्रह्मा, 2015; शाजली और आसमा, 2015; बेगम, 2015; हक़, 2016; सिंह और राय, 2017) एवं इस अध्ययन में विभिन्न प्रकार के मानसिक द्वंद्व द्वारा इस अरुचि की व्याख्या प्राप्त होती है। विशिष्ट कारक के रूप में वैकल्पिक शिक्षा अथवा ट्यूशन के प्रति झुकाव एवं सामुदायिक स्तर पर औपचारिक शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों को हतोत्साहित करने जैसे प्रमुख आयामों का पता चलता है।

निष्कर्षस्वरूप यह कहा जा सकता है कि यद्यपि विभिन्न कारणों से पूर्व में प्रतिभागी औपचारिक शिक्षा से ड्रॉप-आउट हो जाते हैं, परंतु कालांतर में इस प्रघटना का क्षोभ उनके मन में व्यक्तिगत, सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में अपनी स्वतंत्र पहचान न बना पाने के रूप में व्याप्त रहती है। यद्यपि शिक्षा की अवधारणा पारिवारिक एवं सामुदायिक प्रभाव में अभी भी संकुचित ही है क्योंकि वे शिक्षा को मुख्यतः रोज़गार के संदर्भ में ही रखकर देखना चाहते हैं। अतः इस समुदाय के शैक्षणिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि न

© NCERT not to be republished

केवल उनकी आर्थिक प्रस्थिति को सुदृढ़ बनाया जाए, अपितु साथ ही साथ समुदाय विशेष हेतु जागरूकता बढ़ाने के उपाय एवं उचित मार्गदर्शन की व्यवस्था को भी सुनिश्चित करना होगा।

यद्यपि यह अध्ययन गुणात्मक शोध उपागम की परिसीमाओं से बंधा है एवं प्राप्त परिणामों के आधार पर पूरे मुस्लिम समुदाय के संदर्भ में सामान्यीकरण संभव नहीं है, परंतु इस अध्ययन के परिणाम द्वारा निश्चित तौर पर ड्रॉप-आउट की प्रघटना पर नवीन अंतर्दृष्टि प्रस्तुत की गई है, जिन्हें आधार बनाकर सर्वेक्षण प्रश्नावली निर्मित की जा सकती है एवं बड़े पैमाने पर ड्रॉप-आउट विद्यार्थियों के परिप्रेक्ष्य को स्थापित किया जा सकता है, इस प्रकार के सर्वेक्षण द्वारा निश्चित तौर पर प्रभावी नीतियों को निर्मित किया जा सकता है।

देश की आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति में सभी की भागीदारी अनिवार्य है। यह अध्ययन इस ओर भी इंगित करता है कि भागीदारी को सुनिश्चित करने के लिए यह आवश्यक है कि स्थानीय संदर्भों को ध्यान में रखते हुए औपचारिक शिक्षा के प्रति मुस्लिम समुदाय में जागरूकता लाई जाए एवं साथ ही साथ उनकी स्थानीय समस्याओं का समाधान कर उचित प्रयोग करने एवं शैक्षिक नवाचार पर बल दिया जाए।

शैक्षिक निहितार्थ

- अध्ययन से प्राप्त परिणाम मुस्लिम अभिभावकों की शैक्षणिक जागरूकता पर बल देते हैं। साथ ही अभिभावकों की जागरूकता के लिए व्यावहारिक स्तर पर शैक्षणिक कार्यक्रमों के संचालन पर भी बल देते हैं।
- अध्ययन से प्राप्त परिणाम इस बिंदु की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं कि जिस प्रकार शिक्षा का अधिकार कानून विद्यार्थियों के नामांकित न होने या अपव्ययित होने कि प्रघटना के लिए विद्यालय को जवाबदेह बनाता है, उसी प्रकार का कानून अभिभावकगण को जवाबदेह बनाने के लिए भी निर्मित करना चाहिए।
- अध्ययन से प्राप्त परिणाम इस ओर भी इंगित करते हैं कि शिक्षा के अधिकार कानून के तहत शिक्षक-छात्र अनुपात विद्यालय स्तर पर तो लागू हो रहा है, किंतु इस अनुपात को कक्षा स्तर पर भी लागू होना चाहिए।
- समुदाय में शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने के प्रयासों की नितांत आवश्यकता है। ऐसे किसी भी प्रकार के प्रयास में उनकी धार्मिक आवश्यकताओं एवं परंपराओं से सामंजस्य स्थापित करते हुए नवीन कार्यक्रमों को संचालित करने पर अत्यधिक बल दिया जाए। दूसरा, शिक्षा के प्रयासों में विद्यार्थी, अभिभावक एवं शिक्षक के मध्य किसी भी प्रयास को लेकर सामंजस्य एवं समन्वय स्थापित करना भी अति आवश्यक है।
- अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इस समुदाय के हितों की रक्षा करते हुए उनके शिक्षा स्तर को समृद्ध करना है तो कहीं न कहीं गांधीजी के बेसिक शिक्षा की अवधारणा को पुनः नए रूप में लागू करने की आवश्यकता है। किसी भी रूप में मात्र भोजन अथवा पुस्तकों के निःशुल्क वितरण मात्र से शिक्षा में स्वावलंबन की अवधारणा को प्राप्त नहीं किया जा सकता, अपितु इसके लिए शिक्षा के साथ-साथ आर्थिक स्वतंत्रता की राह को भी समानांतर ढंग से सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।

© NCERT not to be republished

संदर्भ

क्रेसवेल, जे. 2003. *रिसर्च डिज़ाइन — क्वालिटेटिव, क्वांटिटेटिव एंड मिक्स्ड मेथड्स अप्रोचेस. (सेकंड एडिशन).* सेज पब्लिकेशन, थाउसेंड ओक्स. http://digitalcommons.liberty.edu.pdf.

गुड, सी.वी. 1973. *डिक्शनरी ऑफ़ एजुकेशन.* मैकग्रा हिल, न्यूयॉर्क.

गौड़ा और शेखर. 2014. फ़ैक्टर लीडिंग टू स्कूल ड्रॉप-आउट इन इंडिया—एन अनालिसिस ऑफ़ नेशनल फ़ैमिली हेल्थ सर्वे—3 डाटा. *जर्नल ऑफ़ रिसर्च एंड मेथड इन एजुकेशन.* 4, पृष्ठ संख्या 75–83.

चौधरी, ए. 2006. रिविज़िटिंग ड्रॉप-आउट्स — ओल्ड ईशूज़, फ्रेश पर्सपेक्टीव. *इकोनोमिक एंड पॉलिटिकल वीकली.* http:// www.jstor.org/stable/4419056.

जयचंद्रन, यू. 2007. *हाउ हाइ आर ड्रॉप-आउट रेट्स इन इंडिया.* https://www.epw.in/Journal/2007/11/how-high-dropout – rates-India.html.

जमाल और रहीम. 2014. *एजुकेशनल इंक्लूजन ऑफ़ मुस्लिम चिल्ड्रन—एक्सप्लोरिंग द चैलेंजिस एंड इंक्लूज़िव स्ट्रटेजीस.* http://delhi.gov.in.

नीपा. 2014–15. *एलीमेंट्री एजुकेशन इन इंडिया—ए रिपोर्ट.* नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन. http://www.dise.inpdf.

———. *डिस्ट्रिक्ट इन्फ़ॉर्मेशन सिस्टम फ़ॉर एजुकेशन फ्लैश स्टेटिस्टिक्स, 2011–15.* http://www.dise.in.

नूना, ए. 2003. *एजुकेशन ऑफ़ मुस्लिम गर्ल्स—ए स्टडी ऑफ़ द एरिया इंटेंसिव प्रोग्राम.* http://www.nuepa.org.pdf.

फैथ. 2009. *कंसल्टेंसी सर्विस फ़ॉर स्टडी ऑन ड्रॉप-आउट रेट्स ऑफ़ स्कूल चिल्ड्रन इन पंजाब.* http://www.pbplanning.gov.in/hdr/dropoutstudy finalreportFaithpdf.

फ़ारूख, एम. 2014. कौजेस ऑफ़ प्राइमरी स्कूल स्टूडेंट्स ड्रॉप-आउट इन पंजाब प्राइमरी स्कूल टीचर्स पर्सपेक्टिव. *जर्नल ऑफ़ एलीमेंट्री एजुकेशन.* 26, पृष्ठ संख्या 57–79.

बसंत, आर. 2007. *सोशल, इकोनोमिक एंड एजुकेशनल कंडीशंस ऑफ़ इंडियन मुस्लिम्स.* http://www.iimahd.ernet.inpdf.

बेगम, ए. 2015. *ए स्टडी ऑन द प्रोब्लम्स ऑफ़ ड्रॉप-आउट्स अमंग द प्राइमरी स्कूल स्टूडेंट एंड देयर रिमेंडियल मिजर्स.* पब्लिश्ड डॉक्टोरल डिज़र्टेशन, गुलबर्ग यूनिर्वसिटी, गुलबर्ग.

ब्रह्मा, जी. 2015. *एलीमेंट्री एजुकेशनल डेवलपमेंट ऑफ़ रिलीज्यस माइनॉरिटि चाइल्ड इन मोंडिया ब्लॉक ऑफ़ बरपेटा डिस्ट्रिक्ट, असम, इंडिया.* www.ijirssc.in/pdf.

भारत सरकार. 2006. *सोशल, इकोनोमिक एंड एजुकेशनल स्टेट्स ऑफ़ इंडिया— ए रिपोर्ट.* भारत सरकार, नयी दिल्ली.

मेंयर्स, एल. 2016. *ए फेनोमेंनोलोजीकल इंवेस्टिगेशन ऑफ़ वुमन्स लर्निंग एक्सपेरिएंसेस काउंसलर एजुकेशन.* https://pdf.semanticscholur .org.

रॉय, सी. 2011. *ए स्टडी ऑन द ड्रॉप-आउट प्रोब्लम ऑफ़ प्राइमरी एजुकेशन इन उत्तर दीनाजपुर, वेस्ट बंगाल, इंडिया.* http://mpra.ub.uni.muenchen.de/40319/.

लस्कर, जे. 2008. *मुस्लिम वुमन इन वेस्ट बंगाल.* https://www.world wide journals.com .

शाजील टी. और सी. आसमा. 2015. एजुकेशनल विजन ऑफ़ मुस्लिम्स इन इंडिया — प्रॉब्लम्स एंड कनसर्न्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंस इनवेंशन.* 4, पृष्ठ संख्या 21–27.

सलमान, ए. 2020. *आई फ़ेल्ड टू वर्क हार्ड— रिजंस फ़ॉर सेकंडरी स्कूल ड्रॉप-आउट अमंग मुस्लिम मैन इन दिल्ली*. https://journals.sagepub.com /doi/abs/.

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय. 2020. *भारत वार्षिक संदर्भ ग्रंथ*. प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नयी दिल्ली.

सिंह, ए. और ए. राय. 2017. मुस्लिम विद्यार्थियों के परिप्रेक्ष्य में विद्यालयी ड्रॉप-आउट की समस्या एक साहित्यिक सर्वेक्षण. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. अक्तूबर 2017. रा.शै.अ.प्र.प.,नयी दिल्ली.

सिंह, एन. 2011. *ए स्टडी ऑफ़ स्कूल सोशल क्लाइमेंट एंड ड्रॉप-आउट एलीमेंट्री लेवल*. (अनपब्लिश्ड थेसिस.) बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी, वाराणसी.

सिद्दीकी, एम. एच. 2013. *द प्रॉब्लम्स ऑफ़ स्कूल ड्रॉप-आउट्स अमंग मायनोरिटीज़ विद स्पेशल रेफ़रेंस टू मुस्लिम्स इन इंडिया*. http://www.irjcjournals.org/.

सिद्दीकी, एम. 2011. *एजुकेशनल बैक्वर्डनेस ऑफ़ मुस्लिम्स इन इंडिया एंड इट्स पॉसिबल रेमेडीज़*. http://www.worldwidejournals.com>file.

सेनगुप्ता, डी. रूज़. 2018. *फ़ैक्टर्स अफ़ेकटिंग जेंडर डिस्पैरिटी इन मुस्लिम एजुकेशन इन इंडिया*. https://journals.sagepub.com/.

सैटर, इ. 1982. *यूनिवर्सल प्राइमरी एजुकेशन इन बांग्लादेश, ढाका*. https://shodhganga.inflibnet.ac.in.

सोशल एंड रूरल रिसर्च इंस्टिट्यूट. 2014. *नेशनल सैमपल सर्वे ऑफ़ एस्टीमेंशन ऑफ़ आउट ऑफ़-स्कूल चिल्ड्रन इन द एज ऑफ़ 6–13 इन इंडिया*. http://www.ssa.nic.inpdf.

हक़, एम. ज़ेड. 2016. मुस्लिम एजुकेशन इन मुर्शिदाबाद डिस्ट्रिक्ट ऑफ़ वेस्ट बंगाल—प्रोब्लम्स एंड सोल्यूशंस. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंस स्टडीज़*. 2, पृष्ठ संख्या 268–272.

हुसैन, ज़ेड. 2005. *एनालायज़िंग डिमांड फ़ॉर प्राइमरी एजुकेशन—स्लम डवल्लर्स ऑफ़ कोलकाता*. http://mpra.ub.uni-muenchen.de/21184/.

© NCERT not to be republished